ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 290-291**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

अचला नागर के कथा–साहित्य में स्त्री–संवेदना

छोटेलाल कुशवाहा
शोध अध्येता– हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-24.02.2025 **Revised-01.03.2025** **Accepted-07.03.2025** **E-mail : chhotelalkushwaha86@gmail.com**

सारांशः हिन्दी कथा–साहित्य का विकास केवल शिल्प और कथानक की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि संवेदना और सामाजिक दृष्टिकोण की दृष्टि से भी निरंतर परिवर्तनशील रहा है। विशेषतः स्त्री–संवेदना का प्रश्न हिन्दी साहित्य में एक केंद्रीय विमर्श के रूप में उभरता है। प्रारंभिक कथा–साहित्य में जहाँ स्त्री प्रायः सहनशील, त्यागमयी और आदर्श रूप में चित्रित हुई, वहीं स्वतंत्रता–उपरांत और समकालीन काल में स्त्री एक स्वायत्त चेतनशील व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है। इसी परिवर्तनशील साहित्यिक परंपरा में अचला नागर का कथा–साहित्य एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के रूप में देखा जा सकता है।

अचला नागर ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में स्त्री–जीवन को किसी वैचारिक नारे या आंदोलनात्मक आग्रह के साथ नहीं, बल्कि जीवन के भीतर से उपजी अनुभूतियों के आधार पर प्रस्तुत किया है। उनकी स्त्री–संवेदना न तो केवल शोषण–कथा है और न ही आदर्शवादी स्त्री–चित्र; बल्कि यह मध्यवर्गीय स्त्री के रोज़मर्रा के संघर्ष, मौन पीड़ा, आत्मसंघर्ष और आंतरिक शक्ति का यथार्थ चित्रण है।

स्त्री–संवेदना के संदर्भ में अचला नागर की विशेषता यह है कि वे स्त्री को केवल सामाजिक संरचनाओं की शिकार के रूप में नहीं दिखातीं, बल्कि उसे निर्णय–क्षम, आत्ममंथनशील और धीरे–धीरे प्रतिरोध की ओर बढ़ती हुई चेतना के रूप में रेखांकित करती हैं। उनके यहाँ स्त्री का संघर्ष बाह्य से अधिक आंतरिक है– एक ऐसा संघर्ष जो परिवार, विवाह, संबंधों और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच स्वयं को पहचानने का प्रयास करता है।

कुंजीभूत शब्द– स्त्री–संवेदना, शिल्प और कथानक, निरंतर परिवर्तनशील, केंद्रीय विमर्श, सहनशील, त्यागमयी और आदर्श रूप, चेतनशील व्यक्तित्व ।

अचला नागर की रचनाओं में स्त्री–संवेदना अनुभवजन्य है। यह संवेदना स्मृति, अकेलेपन, दायित्व–बोध, भावनात्मक रिक्तता और आत्मसम्मान जैसे तत्वों से निर्मित होती है। उनकी स्त्री चिल्लाती नहीं, विद्रोह का नारा नहीं लगाती, बल्कि मौन, दूरी और आत्मनिर्णय के माध्यम से अपनी असहमति व्यक्त करती है। यही मौन उनकी स्त्री–संवेदना को गहराई और प्रामाणिकता प्रदान करता है।

इस प्रकार अचला नागर का कथा–साहित्य समकालीन हिन्दी कथा–परंपरा में स्त्री–अनुभव का एक सशक्त दस्तावेज़ प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य अचला नागर के कथा–साहित्य में निहित स्त्री–संवेदना के विविध आयामोंकृपारिवारिक जीवन, मध्यवर्गीय यथार्थ, वैवाहिक संबंध, अकेलापन, स्मृति और आत्मनिर्णयकृका विश्लेषण करना है।हिन्दी कथा–साहित्य में स्त्री–संवेदना का विकास सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और स्त्री–आंदोलन से जुड़ा रहा है। प्रेमचंद के यथार्थवादी स्त्री–पात्रों से लेकर समकालीन लेखिकाओं तक यह संवेदना क्रमशः अधिक आत्मचेतन और प्रश्नाकुल होती गई है। अचला नागर इसी परंपरा की सशक्त प्रतिनिधि हैं। उनके कथा–साहित्य में स्त्री जीवन के सूक्ष्म अनुभवकृघरेलू तनाव, वैवाहिक असंतोष, मातृत्व, अकेलापन, आकांक्षाएँ और प्रतिरोधकृसंवेदनशील कलात्मकता के साथ अभिव्यक्त हुए हैं।

स्त्री–संवेदना : अवधारणा और स्वरूप– स्त्री–संवेदना केवल स्त्री–पीड़ा का चित्रण नहीं, बल्कि स्त्री के संपूर्ण अनुभव–लोक की अभिव्यक्ति है। इसमें भावनात्मकता, बौद्धिकता, निर्णय–क्षमता और सामाजिक चेतना सम्मिलित होती है।
अचला नागर की कथाओं में स्त्री–संवेदना, अनुभवजन्य है, उपदेशात्मक नहीं, आत्मकथात्मक छाया लिए हुए है, सामाजिक संरचनाओं से टकराती है। "स्त्री के जीवन की सच्चाई उसके मौन, उसके समझौतों और उसके छोटे–छोटे प्रतिरोधों में छिपी होती है।"[1]

पारिवारिक जीवन और स्त्री–संवेदना– अचला नागर के कथा–साहित्य में परिवार स्त्री के लिए सुरक्षा–स्थल भी है और बंधन भी। पति–पत्नी संबंधों में संवादहीनता, अपेक्षाएँ और असंतुलन स्त्री–संवेदना को गहराते हैं। उनकी कहानी "समय के साथ" में नायिका का आंतरिक द्वंद्व पारिवारिक जिम्मेदारियों और आत्म–इच्छाओं के बीच झूलता दिखाई देता है। "वह हर रिश्ते को निभाती रही, पर कहीं कोई रिश्ता उसे पूरी तरह अपना न सका।"[2]

मध्यवर्गीय यथार्थ और स्त्री अनुभव– अचला नागर का रचना–संसार मुख्यतः शहरी–मध्यवर्गीय स्त्री को केंद्र में रखता है। यह वर्ग न तो अत्यधिक अभावग्रस्त है और न ही पूर्णतः स्वतंत्र। यही द्वंद्व उनकी स्त्री–संवेदना को विशिष्ट बनाता है।

उनकी कथाओं में आर्थिक सुरक्षा के बावजूद भावनात्मक असुरक्षा स्त्री–जीवन की बड़ी समस्या बनकर उभरती है। "सुविधाओं से भरे घर में रहते हुए भी वह स्वयं को खाली महसूस करती थी।"[3]

वैवाहिक संबंध और स्त्री–अस्मिता– अचला नागर विवाह संस्था को आदर्श रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक यथार्थ के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनकी स्त्री–पात्र विवाह के भीतर अपनी पहचान तलाशती हैं। वे विद्रोह से अधिक आत्ममंथन के रास्ते आगे बढ़ती हैं। "विवाह ने उसे नाम दिया, पर पहचान नहीं।"[4] यह कथन स्त्री–अस्मिता के प्रश्न को गहराई से रेखांकित करता है।

अकेलापन, स्मृति और स्त्री–मन– अकेलापन अचला नागर की स्त्री–संवेदना का एक केंद्रीय तत्व है। भीड़ और परिवार के बीच रहते हुए भी स्त्री अकेली है। स्मृतियाँ उसके लिए सहारा भी हैं और पीड़ा का कारण भी। "उसका वर्तमान स्मृतियों के बोझ तले दबा हुआ था।"[5]

स्त्री का प्रतिरोध : मौन से आत्मनिर्णय तक– अचला नागर की स्त्री प्रत्यक्ष विद्रोह नहीं करती, बल्कि मौन, दूरी और आत्मनिर्णय के माध्यम से प्रतिरोध करती है। यह प्रतिरोध अधिक यथार्थवादी और प्रभावी है। "उसने विरोध में कुछ कहा नहीं, बस अपने लिए निर्णय लेना सीख लिया।"[6]

भाषा, शिल्प और स्त्री–संवेदना– अचला नागर की भाषा सहज, संवेदनात्मक और आत्मीय है। उनकी कथात्मक शैली स्त्री–मन के उतार–चढ़ाव को बारीकी से पकड़ती है। संवाद कम और अंतर्मन के स्वर अधिक हैं, जो स्त्री–संवेदना को प्रामाणिक बनाते हैं।

समकालीन हिन्दी लेखिकाओं से तुलना– अचला नागर को मृदुला गर्ग, मन्नू भंडारी और उषा प्रियंवदा की परंपरा में रखा जा सकता है। परंतु उनकी विशेषता यह है कि वे स्त्री–अनुभव को अत्यधिक बौद्धिक बनाए बिना, जीवन की सहजता में प्रस्तुत करती

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

हैं। समकालीन हिंदी कथा–साहित्य में महिला लेखिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। इस कालखंड में लेखिकाओं ने न केवल स्त्री–जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्ति दी, बल्कि मध्यवर्गीय जीवन, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक दबावों और मानसिक द्वंद्वों को भी केंद्र में रखा। अचला नागर इसी परंपरा की एक सशक्त कथाकार हैं। उनकी तुलना मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग एवं चित्रा मुद्गल जैसी समकालीन लेखिकाओं से करने पर उनकी रचनात्मक विशिष्टता और दृष्टि स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती है।[7]

अचला नागर और मन्नू भंडारी– मन्नू भंडारी के कथा–साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाएँ, पारिवारिक तनाव और नैतिक द्वंद्व प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। उनकी कहानियों में स्त्री–मन की सूक्ष्म अनुभूतियाँ और सामाजिक यथार्थ का संतुलित चित्रण मिलता है। अचला नागर भी मध्यवर्गीय जीवन को केंद्र में रखती हैं, किंतु उनकी रचनाओं में सामाजिक दबाव अधिक तीव्र रूप में उभरते हैं। जहाँ मन्नू भंडारी की स्त्री आत्मसंघर्ष के साथ निर्णय लेने की स्थिति में दिखाई देती है, वहीं अचला नागर की स्त्री प्रायः परिस्थितियों से समझौता करती हुई यथार्थ को स्वीकार करती है।[8]

अचला नागर और कृष्णा सोबती– कृष्णा सोबती की कथाओं में भाषा की सशक्तता, स्त्री की स्वायत्तता और विद्रोही चेतना प्रमुख है। उनकी स्त्री–पात्र सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने का साहस रखती हैं। इसके विपरीत अचला नागर की स्त्री विद्रोह से अधिक संवेदना और संघर्ष की प्रतीक है। वे सामाजिक ढांचे को पूरी तरह तोड़ने के बजाय उसके भीतर रहकर अपनी पहचान बनाए रखने का प्रयास करती हैं। इस दृष्टि से अचला नागर की स्त्री अधिक यथार्थपरक और मध्यवर्गीय मानसिकता से जुड़ी हुई प्रतीत होती है।[9]

अचला नागर और उषा प्रियंवदा– उषा प्रियंवदा की कहानियों में शिक्षित मध्यवर्गीय स्त्री की मानसिक अकेलापन, भावनात्मक असंतोष और पारिवारिक विघटन प्रमुख विषय हैं। उनके पात्र आत्मकेंद्रित और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जटिल होते हैं। अचला नागर के पात्र भी मानसिक द्वंद्व से गुजरते हैं, किंतु उनकी समस्याएँ अधिक सामाजिक और पारिवारिक धरातल से जुड़ी होती हैं। उषा प्रियंवदा की तुलना में अचला नागर का कथा–संसार सामूहिक पारिवारिक जीवन और सामाजिक मर्यादाओं से अधिक गहराई से जुड़ा हुआ है।[10]

अचला नागर और मृदुला गर्ग– मृदुला गर्ग के साहित्य में स्त्री–स्वतंत्रता, देहबोध और आधुनिक जीवन की जटिलताएँ मुखर रूप में अभिव्यक्त हुई हैं। उनकी रचनाएँ साहसी और वैचारिक स्तर पर प्रयोगशील हैं। अचला नागर इस संदर्भ में अधिक संयमित और यथार्थवादी लेखिका हैं। वे मध्यवर्गीय नैतिकता और सामाजिक सीमाओं के भीतर रहकर स्त्री–संवेदना को प्रस्तुत करती हैं। इसीलिए उनका साहित्य व्यापक मध्यवर्गीय समाज से अधिक सहज रूप में जुड़ता है।[11]

अचला नागर और चित्रा मुद्गल– चित्रा मुद्गल के कथा–साहित्य में श्रमिक वर्ग, निम्न मध्यवर्ग और स्त्री संघर्ष का सशक्त चित्रण मिलता है। उनका दृष्टिकोण अधिक सामाजिक और वर्गीय चेतना से युक्त है। अचला नागर का फोकस मुख्यतः शहरी एवं कस्बाई मध्यवर्ग पर केंद्रित है। उनकी चेतना सामाजिक क्रांति से अधिक मानवीय संवेदना और मानसिक संघर्ष पर आधारित है। इस कारण उनकी कथाएँ शांत, गंभीर और अंतर्मुखी प्रभाव छोड़ती हैं।

तुलनात्मक निष्कर्ष– समकालीन लेखिकाओं की तुलना में अचला नागर की विशिष्टता उनके मध्यवर्गीय यथार्थ, संवेदनशील स्त्री–चित्रण और मनोवैज्ञानिक संतुलन में निहित है। जहाँ कुछ समकालीन लेखिकाएँ विद्रोह और प्रयोग को केंद्र में रखती हैं, वहीं अचला नागर जीवन के सामान्य, किंतु गहरे अनुभवों को साहित्यिक गरिमा प्रदान करती हैं। उनका कथा–साहित्य मध्यवर्गीय समाज की वास्तविक मानसिकता का प्रामाणिक दस्तावेज है।

सदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नागर, अचला – समय के साथ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005, पृष्ठ 42.
2. वही पृष्ठ 67.
3. नागर, अचला – छल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2010 पृष्ठ 91.
4. वही पृष्ठ 104.
5. मिश्र, रमेशचंद्र – समकालीन हिन्दी कथा साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण 2012 पृष्ठ 37.
6. नामवर सिंह, हिन्दी कथा साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012 पृष्ठ 168.
7. मन्नू भण्डारी, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011 पृष्ठ 54.
8. कृष्णा सोबती, हम हशमत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2009 पृष्ठ 73.
9. उषा प्रियंवदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010 पृष्ठ 89.
10. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2008 पृष्ठ 102.
11. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बाक्स नं०–203, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2013 पृष्ठ 61.

*****